हिन्दी साहित्य : नारी अंतर्द्वन्द्व

डॉ० ओकेन्द्र
डॉ० कादम्बिनी मिश्र

CamScanner

हिन्दी साहित्य : नारी अंतर्द्वन्द्व

सम्पादक
डॉ० ओकेन्द्र
डॉ० कादम्बिनी मिश्र

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 09990236819
ईमेल: jtspublications@gmail.com

CamScanner

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

हिन्दी साहित्य : नारी अंतर्द्वन्द्व

सम्पादक
डॉ० ओकेन्द्र, डॉ० कादम्बिनी मिश्र

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२३
ISBN 978-93-5786-102-1

प्रकाशक
जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स
वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३
दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३
E-Mail : jtspublications@gmail.com
मूल्य : ६६५.०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली
मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

Hindi Sahitya : Nari Antardwand Edited by
Dr. Okendra, Dr. Kadambani Mishra

CamScanner

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन : नारी : सृष्टि की निर्मात्री एवं सच्ची मार्गदर्शिका ५

१. भारतीय नारी : कल, आज और कल १५
डॉ० घनश्याम भारती
२. हिन्दी साहित्य : नारी अंतर्द्वन्द्व २५
डॉ० कादम्बिनी मिश्र
३. महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में नारी चेतना का चित्रण २७
डॉ. शोभना कोक्काड़न
४. दयानंद पांडेय के उपन्यास में नारी विमर्श ३७
जयश्री बसवेश्वर होदाड़े
५. समकालीन साहित्य में दलित नारी ४५
डॉ० ओकेन्द्र, डॉ० (सुश्री) राणी बापू लोखंडे
६. नई कहानी में नारी अस्मिता व संवेदना का प्रश्न और मन्नू भंडारी की कहानियाँ ८५
नटराज गुप्ता
७. समकालीन हिंदी साहित्य में नारी विमर्श ९४
डॉ० मोहनी दुबे
८. रमणिका गुप्ता कृत आत्मकथा 'हादसे' में चित्रित नारी संघर्ष १०२
जिशुरानी चांगमाइ
९. साहित्य में नारी विमर्श (कृष्णा अग्निहोत्री के 'निलोफर' उपन्यास के विशेष संदर्भ में) १०८
डॉ० बेबी श्रीमंत खिलारे
१०. महिला रचनाकारों के साहित्य में नारी-चिंतन का अंतर्द्वन्द्व ११६
डॉ. पल्लवी सिंह 'अनुमेहा'
११. चंद्रकांता के उपन्यास 'कथा सतीसर' में स्त्री-विमर्श १२१
ममता माली
१२. समकालीन हिन्दी कहानियों में नारी चेतना और संवेदना १३६
डॉ. प्रकाश कृष्णदेव धुमाल
१३. साहित्य में नारी अंतर्द्वन्द्व एवं प्रतिरोध के स्वर १५३
प्रसादराव जामि

CamScanner

१४. समर की कहानी में वर्णित ममता और प्रेम की भावना १६१
डॉ. जी. शान्ति
१५. प्रभा खेतान की रचनाओं में नारी-चिंतन १६८
प्रा. डॉ. विलास तुकाराम राठोड
१६. मधु कांकरिया की कहानियों में नारी-जीवन १७७
डॉ. संतोष कुमार अहिरवार
१७. आधुनिक नारी : दशा एवं दिशा १८४
श्रीमती बी. सुगुणा कुमारी
१८. कुटीर उद्योगों में महिलाओं की सहभागिता १९१
डॉ. अर्चना
१९. नारी सशक्त या अशक्त (साहित्यिक सामाजिक विश्लेषण) १९५
उपकार दत्त शर्मा
२०. शिवानी की कहानियों में नारी संवेदना २०६
डॉ. सुरिन्द्रपाल कौर
२१. समकालीन हिंदी साहित्य और कामकाजी महिलाएँ २१३
ज्योति
२२. डॉ. कुसुम अंसल के उपन्यास 'खामोशी की गूँज' में नारी अंतर्द्वन्द्व २१९
छाया जाधव
२३. शिवमूर्ति के कथा साहित्य में चित्रित ग्रामीण स्त्री के विविध रूप २२४
प्रवेश के. त्रिपाठी
२४. महिला कथाकारों के उपन्यास साहित्य में नारी अंतर्द्वन्द्व २३१
डॉ. संतोष कुमार अहिरवार
२५. साहित्य में नारी अंतर्द्वन्द्व २४१
डॉ. कादम्बिनी मिश्र

CamScanner

साहित्य में नारी विमर्श (कृष्णा अग्निहोत्री के 'निलोफर' उपन्यास के विशेष संदर्भ में)

—डॉ. बेबी श्रीमंत खिलारे

सारांश :— कृष्णा अग्निहोत्री जी ने स्त्री को न तो देवी माना है न दानवी औरत को औरत समझकर उनके दर्द को चित्रित किया है। पुरानी रूढियों और अंधानुकरण के प्रति विद्रोही पात्रों के माध्यम से विरोध दर्शाकर हमे सोचने के लिए बाध्य किया है। कृष्णाजी ने नारी शिक्षा को महत्वपूर्ण माना है शिक्षा के कारण नारियाँ चेतित हो रही है। आधुनिक काल की नारी में नई चेतना एवं जागृति आने के कारण खुद पर या दूसरी औरत पर होने वाला अन्याय देख नही सकती। कृष्णाजी ने अपने उपन्यास की नारी की पारिवारिक स्थिति को दयनीय चित्रित किया है। इसके मूल में आर्थिक दबाव है। नौकरी करने वाली नारी रूपए कमाने का यंत्र बनती है, उसे अपना कुछ अस्तित्व नही इस प्रस्तुत उपन्यास की नीलम की जिंदगी इसी बात की मिसाल है। इसीलिए बुर्का पद्धति, नारियों पर थोपे हुए परंपरा से आए गलत रीति–रिवाजों का नीलम द्वारा विरोध किया है। कृष्णाजी ने नारी विमर्श के रूप में नारी का बहु आयामी जीवन एवं रूप चित्रित करके नारी जीवन को नई दिशा देने का कार्य किया है।

सामाजिक बंधनों की अपनी एक महत्ता होती है किंतु जब इन बंधनों का नए परिवेश मे नवमल्यों व नई अवस्थाओं में प्रभाव घटने लगता हैं तो नई व पुरानी पीढ़ी में तनाव पैदा होते है। आज इन तनावों का शिकार विशेषकर नारी हो रही है। पुराने मूल्यों को तोड़ने और नए मूल्यों को स्थापित करने में नारी को बहुत कुछ सहना पड़ रहा है। फिर भी आज अनेक स्त्रियाँ, पिता, पति या पुत्र के सपनों में बारूदी सुरंगे बिछाकर समझ चुकी हैं कि वे किसी की गुलाम, दासी

असिस्टेंट प्रोफेसर, दादा पाटील महाविद्यालय कर्जत, जि. अहमदनगर (महाराष्ट्र)

भोग्या, वस्तु या संपत्ति नहीं है, वे अपना–अपना घर बना रही है, मुक्ति के रास्ते ढूँढ रही है। हर क्षेत्र में महिलाएँ प्रवेश कर रही हैं। कृष्णा अग्निहोत्री के कथा साहित्य में इस परिवर्तित नारी स्थिति की तलाश करना प्रस्तुत प्रपत्र का उद्देश्य है।

आज नारी के पास नई परिभाषाएँ हैं, नई शब्दकांति है, नयी वैचारिक धारा है। आज वह पुरूष के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ रही है और यह उसके प्रयास एक नेक इन्सान बनने के लिए है। वह एक महामानव बनना चाहती है । सभी क्षेत्रों में अधिकार पाना चाहती है। भारतीय नारी का यह संघर्ष पुरूषों के खिलाफ नहीं, उस वातावरण के विरूध्द है जिसे बदलने की आवश्यकता है। पुरूष लेखकों ने जहाँ नारी को उपेक्षित चित्रित किया है या पुरूषी अहं को अभिव्यक्त किया है, वहीं स्त्री लेखिकाओं ने पुरूषों को कहीं भी उपेक्षित चित्रित नहीं किया। इतना ही नहीं स्त्री का चित्रण उसकी मर्यादाओं के अनुसार, प्रवृत्तियों के अनुसार किया है। कई हिंदी अहिंदी लेखिकाओं ने अपनी–अपनी रचनाओं में नारी से संबंधित कई प्रश्न उठाएँ हैं। कृष्णाजी ने भी अपने उपन्यास साहित्य में नारी की समस्याएँ चित्रित की हैं साथ ही नारी विषयक अपना दृष्टिकोण भी व्यक्त किया है।

कृष्णाजी का साहित्य कोरी कल्पना नहीं वरन् सदियों से शोषित, पद्दलित, उपेक्षित महिलाओं के दर्द की आवाज है। उन्होंने स्त्री को न तो देवी माना है न दानवी, औरत को औरत समझकर उनके दर्द को चित्रित किया है। पुरानी रूढ़ियों और परंपराओं का अंधानुकरण के प्रति विद्रोही पात्रों के माध्यम से विरोध दर्शाकर उन्होंने हमे सोचने के लिए बाध्य किया है। कृष्णा अग्निहोत्री का 'नीलोफर' यह उपन्यास लंबी कथावाला उपन्यास है जो अनेक विध समस्याओं को चित्रित करता है। इस उपन्यास की कथावस्तु तीन भागों में विभाजित की है। प्रथम भाग में गुलाम नारी, दूसरे भाग में आदिवासी नारी का चित्रण तथा तृतीय भाग में आधुनिक नारी की जीवंत दास्तां दिखाई देती है। प्रस्तुत उपन्यास के माध्यक से कृष्णा अग्निहोत्री ने अलग–अलग समाज

CamScanner

व्यवस्था में स्थित नारी जीवन को दर्शाया है। साथ ही अपने विचार भी स्पष्ट किए है।

सामाजिक कुरीतियों से नारी मुक्ति

आधुनिक काल की नारी में नई चेतना एवं जागृति आने के कारण वह विद्रोह करके सामाजिक कुरीतियों से मुक्त हो रही है। आधुनिक नारी चेतित होने के कारण खुद पर या दूसरी औरत पर होनेवाला अन्याय देख नही सकती। वह पारंपारिक बंधनों को तोडकर मुक्त जीना चाहती है। वह समाज की गलत मान्यता तथा कुरीतियों का विरोध करती दिखाई दे रही है। इस उपन्यास की नीलम हिंदू डॉक्टर है। वह मुस्लिम अहमद से प्रेमविवाह करती है, परंतु विवाह के बाद उसकी सास उसे बुर्का पहनने के लिए कहती है, अहमद भी अपनी माँ की बातों में आकर उसे बुर्का पहनने के लिए कहता है तब नीलम और अहमद में विवाद होता है। नीलम कहती है "'तुम्हारी कई बहने हैं, जो बुर्का नही पहनती और में तो डॉक्टर हूँ...। तुम क्या अम्मी से मेरे लिए एक लफ्ज़ भी नहीं बोलोगे ?' अहमद कहता है 'तुम क्या जानती नहीं की वे इस शादी के खिलाफ थी ?' कुछ कहुँगा तो बात बिगडेगी, बनेगी नही नीलू। तुम दो मिनट बुर्का ओढ भी लेती ...मोटर मे तो उसे उतारना ही था न।' नीलम कहती है 'बुर्का...और मैं ? क्या कहते हो तुम ?"[1] नीलम बाहर जाने के लिए मना करती है परंतु बुर्का नहीं पहनती। सास जब नीलम के बेटे को नमाज पढना, अल्ला कहकर दुआ माँगना, धर्म की इन बातों को जब वह बेटे की मासूमियत पर थोपती है तब नीलम इन बातों का विरोध करती है। यहाँ लेखिका ने इस उपन्यास के माध्यम से पर्दा जैसी कुप्रथा का विरोध किया है। नीलम प्रतिकात्मक नारी है, जो समाजविघातक रूढियों का विरोध करती है।

नारी शिक्षा – परिवर्तन का माध्यम

भारत देश में राजनैतिक सुधार के साथ समाज जागृती के लिए नारी शिक्षा को महत्वपुर्ण माना ...

चेतित हो रही है। डॉ. पायेरी ने लिखा है कि "स्त्री पुरूष की अनुकर्ता न होकर अब अपने स्वतंत्र अस्तित्व के प्रति जागरूक है। आज नारी आत्मनिर्भर बनकर अपना भाग्य स्वयं निर्धारण करने में लगी है। वह पुरूष से स्वयं को किसी भी प्रकार हीन अनुभव नहीं करती। समाज के विभिन्न कार्यक्षेत्रों में आगे बढकर स्त्री ने परंपरागत अबला के मूल्य के स्थान पर सबला नारी के मूल्यों की प्रतिष्ठा की है।"[2] कृष्णाजी के साहित्य में शिक्षा से नारी में होनेवाले परिवर्तन को चित्रित किया है। प्रस्तुत उपन्यास की नथनी पहाडों में रहनेवाली अनपढ आदिवासी लडकी है। उसे न ही कपडे पहनने का सलीका था और न रहने का। वह मंगलु से ब्याहती है और जब मास्टर अशोक से मिलती है तब पढने की इच्छा प्रकट करती है। लेखिका ने लिखा है "कुछेक माह में ही नथनी बहुत पढ गई। अशोक ने अश्चर्य से देखा कि वह रोज नहाती है ... कंघी करती है ... यहॉ तक कि गोंड महिलाओं की तरह सभ्य लगने लगी है।"[3] आगे चलकर नथनी अन्याय का विरोध करनेवाली, स्वाभिमानी नारी के रूप में दिखाई देती है।

नारी की पारिवारिक स्थिति

नारी जागरण के बाद भी भारतीय नारी का परिवार में शोषण हो रहा है। डॉ. अमर ज्योति ने कहा है "महिलाओं में जहॉ पारिवारिक दायित्व को पूरा हेतु धनोपार्जन की अभिलाषा प्रबल है वही अपनी स्वतंत्रता स्थापित करने की उमंग भी उनमें प्रचुर मात्रा में दिखाई देती है। इस प्रकार आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने के बावजूद भी स्त्री पारिवारिक तथा व्यावसायिक दोनों घरातलो पर शोषण का शिकार है।"[4] कृष्णाजी ने अपने उपन्यास में नारी की पारिवारिक स्थिति को दयनीय चित्रित किया है। उपन्यास की नीलम पेशे से डॉक्टर है। सास तथा पति के लिए नीलम सिर्फ पैसे कमाने की मशीनभर है। पति अहमद क्या कारोभार करता है, कहॉ घूमता है इसके बारे में नीलम को कुछ नहीं बताता। नीलम को अस्पताल तथा घर का भी काम देखना पडता है। जब घर में मेहमान आते है तब सास एक जगह बैठकर हुकुम चलाती रहती है," दुल्हन आज जरा खाना जायकेदार बनाना।

रोज–रोज सालन खाकर पेट नहीं भरता"[6] पति जब बाहर से आता है, मेहमानों के साथ हंसी–मजाक में मशगुल रहता है। उस घर में भूखी–प्यासी थकी नीलू भरे–पुरे माहोल में एकदम अकेली और मायूस–सी लेटी रहती। परिवार में नीलम को कभी सम्मान का स्थान नहीं मिला। आगे चलकर दुबई मे नीलम को सबिहा, असलम और परबीन मिलते हैं। असलम अपनी पत्नी और दो बच्चियों के होते हुए परबीन से नाजायज संबंध रखता है। नीलम की मौसेरी बहन पींकी सिख नरेंद्र से विवाह करती है परंतु नरेंद्र कुलदीप कौर के साथ नाजायज संबंध रखता है। इधर मायके में आंतरजातीय विवाह के कारण पींकी को पिताजी माफ नहीं करते। पींकी की अवस्था अपने ही परिवार में ना यहॉ की ना वहॉ की इसी प्रकार होती है।

नारी की आर्थिक स्थिति

कोई भी व्यक्ति अर्थार्जन के लिए ही नोकरी करता है। वह नारी हो या पुरूष। अधिकांशतः नारियॉ आर्थिक दबाव के कारण पुरूष के समान अपने आश्रितों के भरण–पोषण की व्यवस्था के लिए घर से बाहर निकलकर अर्थार्जन करती है। काम के लिए घर के बाहर जाना या केवल गृहकार्य करना, उनकी इच्छा पर निर्भर नहीं रहता। कृष्णाजी ने अपने उपन्यास में आर्थिक दबाव को स्पष्ट किया है। उपन्यास की नीलम की शादी के बाद आर्थिक स्थिति खराब होती है। पति नौकरी नहीं करता, आराम तलब सास को ऐशो – आराम के लिए नीलम से पैसे चाहिए। अगर नीलम थक भी जाती है तब भी उसे घर पर भी पेशंट देखने पडते हैं। पति अहमद भी उसे घर पर बैठी देख नहीं सकता और कभी पैसे कमाने की चिंता भी नहीं करता। वह नीलम के बारे में कभी सोचता नहीं। नीलम कहीं बाहर घुमने जाए उसे मंजूर नही तब नीलम कहती है, "नौकरी...नौकरी...नौकरी! मैं भी तो इंसान हूँ। मुझे पार्टी में जाना अच्छा लगता है।"[6] नीलम नोकरी से तंग आती है, मगर नोकरी तो उसे करनी ही पडती है। लगता है नौकरी करनेवाली नारी रूपए कमाने का यंत्र बनती है। उसे अपना कुछ अस्तित्व नहीं

रहता। इसके मूल में परिवार की स्थिति रहीं है। नीलम की जिंदगी इसी बात की मिसाल है।

नारी मुक्ति का लक्ष्य

मुक्ति की कामना प्रत्येक व्यक्ति की आंतरिक कामना होती है। अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए प्रत्येक व्यक्ति का स्वतंत्र होना आवश्यक है। स्वतंत्रता का अर्थ केवल आजादी नहीं बल्कि एक जीवन मूल्य है। समता, स्वातंत्र्य और भाईचारे के इस युग में नारी स्वतंत्रता का अपना विशेष महत्व है। राष्ट्र और मानव समाज की उन्नति एवं विकास के लिए नारी–मुक्ति आवश्यक है। पारंपारिक बंधनो से तथा पुरूषों की सामंतवादी सोच से नारी को मुक्त होना जरूरी है। कृष्णाजी ने अपने उपन्यास में परंपरा के बंधनों से जकडी, पति को भगवान माननेवाली मान्यता से नारी को मुक्त किया है। उपन्यास की नीलम का पुनर्जन्म हुआ है। देश में गद्दारी करनेवाले पति तथा सास को नीलम पहचानती है और पति को गिरफ्तार करवाना चाहती है। अहमद पहचानता है कि नीलम उसके बारे में सबकुछ जान गई है इसलिए वह नीलम को जान से मारना चाहता है, परंतू नीलम उसे कहती है, "बहुत जन्मों से तुम मुझे मारते रहे हो। मैं ही पहले मरी हूँ...। पर इस बार वह कहानी नहीं दुहरायी जाएगी। मैं अब पहले सी दासी, अनपढ और भोली नहीं। पढ़ी लिखी जिम्मेदार, समझदार स्त्री हूँ, जिसे मारना इतना सरल नहीं।"[7] नीलम पढी–लिखी होने के कारण पारंपारिक विचारों से मुक्त होकर, अन्याय करनेवाले पति को जान से मार देती है।

शोषण के प्रति नारी आक्रोश

आज की नारी पढी लिखी होने के कारण अपने अधिकार को समझ रही है। जब कभी कोई उसका शोषण करता है तब वह चुप नही बैठती। वह अपने आप के प्रति सजग हो रही है। वह खुद के प्रति चेतित दिखाई देती है। कृष्णाजी ने उपन्यास में नीलम, नथनी के माध्यम से शोषण के प्रति आक्रोश व्यक्त किया है। उपन्यास की नथनी

CamScanner

आतंकवादियों के हमले में खो जाती है। यही आतंकवादी नथनी की अस्मत लुटते है, और नथनी को भयंकर गंदी बीमारी लगती है। इसके बाद भी एक पंडित और दो अफसर नथनी की इज्जत के साथ खिलवाड करते है परंतु तब नथनी इन तीनों को बारी–बारी अपने पास आने देती है। नथनी जब बीमारी के बारे में पंडित से बताती है तो पंडितजी उसे मारने दौडते है तब नथनी हंसिये से उसका गला काट देती है। इसी प्रकार नथनी अपना आक्रोश व्यक्त करती है। उपन्यास की नीलम की सास नीलम पर नमाज पढने के लिए जोर डालती है तथा बुर्का ओढने के लिए कहती है तब नीलम अपनी अटैची जमाकर घर छोडने की घोषणा करती है। आगे चलकर पति के अन्याय बढते है। हमेशा बाहर रहना, नीलम का खयाल न रखना बाहर से आने के बाद मेहमानों के साथ मशगुल रहना यहॉ तक तो नीलम बर्दाशत करती है परंतु तब पति देशद्रोही है, आतंकवादी के साथ मिला हुआ है यह समझने के बाद अहमद उसे जान से मारने की धमकी देता है तब नीलम उसपर गोलियॉ दाग देती है। इसी प्रकार कृष्णाजी के उपन्यास की नारी सजग है। खुदपर होता हुआ अन्याय चुपचाप न सहकर विद्रोह करती है।

निष्कर्ष :– निष्कर्षतः हम कह सकते है कि साहित्य में नारी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष तथा अन्याय समाप्ती करती दिखाई देती है। परंपरा में जकडी, दकियानुसी रिवाजों से मुक्त होकर नारी अपने पैरो पर खडी होकर घर से बाहर कदम रख रही है। पति को भगवान मानकर उसका अन्याय नही सहती तो शोषण के प्रति आक्रोश व्यक्त करती दिखाई देती है। नीलम, नथनी अन्याय न सहकर आक्रोश व्यक्त करती है। कृष्णाजी की नारी अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती है। नारी शिक्षा नें नारी को आत्मनिर्भर बना दिया है। रूढिवादी सामाजिक व्यवस्था से नारी मुक्ति की छटपटाहट लेखिका के लिखन का लक्ष्य रहा है। आज नारी अपने विषम स्थितियों में निरंतर जुझते हुए भी अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व को स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील दिखाई दे रही है। कृष्णाजी ने अपने उपन्यास में नारी के प्रति अपने विचार स्पष्ट किए है। उन्होंने उपन्यास के माध्यम से सामाजिक, कुरीतियॉ, नारी के प्रति

CamScanner

समाज की गलत मान्यता का विरोध किया है। बुर्का पद्धति, नारियों पर थोपे हुए परंपरा से आए गलत रीति–रिवाजों का नीलम द्वारा विरोध किया है। कृष्णाजी ने नारी शिक्षा से आए हुए परिवर्तन को स्पष्ट किया है। शिक्षा से आत्मनिर्भर बनकर नारी अन्याय करनेवालों से जवाब देती है। शिक्षा से नारी अपने आपके प्रति सजग हो उठी है। नथनी में शिक्षा से आया परिवर्तन दिखाई देता है। कृष्णाजी के उपन्यास की नारी की पारिवारिक स्थिति दयनीय है। नारी जागरण के बाद भी परिवार में नारी का शोषण हो रहा है। उपन्यास की नीलम, साबिहा, तथा पिंकी के द्वारा इस बात को उठाया है।

यहाँ स्पष्ट है कृष्णाजी के उपन्यास में नारी के विविध रूप यथार्थ रूप में चित्रित हुए है। नारी विमर्श के रूप में नारी का बहु आयामी जीवन एवं रूप चित्रित करके नारी जीवन को नई दिशा देने का कार्य हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. कृष्णा अग्निहोत्री – नीलोफर, पृष्ठ–170, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली। संस्करण–1998.
2. डॉ. पायेरी हेमंतकुमार – आलोचना, पृष्ठ–64, जुलाई, संस्करण सितंबर–1992.
3. कृष्णा अग्निहोत्री–नीलोफर, पृष्ठ–109, इंद्रप्रस्था प्रकाशन, दिल्ली। संस्करण–1998.
4. डॉ. अमर ज्योति–महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारीवादी दृष्टि, पृष्ठ–87, अन्नपुर्णा प्रकाशन, कानपुर, संस्करण–1999.
5. कृष्णा अग्निहोत्री–नीलोफर, पृष्ठ–201, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली। संस्करण–1998.
6. वही–पृष्ठ–161.
7. वही–पृष्ठ–214.

CamScanner